दोहा 55

सायंकाल सम मायन, तीनों बिधि रंग गात।

मसि बिलोचि दृग दुगुन जल, रवि जलजत लज जात॥ ५५॥

प्रसंग

इसमें कवि ने नायिका के सौंदर्य का वर्णन सायंकाल (संध्या) के रूपक के माध्यम से किया है। नायक नायिका के रूप को देखकर मोहित हो जाता है।

शब्दार्थ

- सायंकाल सम मायन – संध्या के समान मायामयी
- तीनों बिधि रंग गात – शरीर में तीन प्रकार के रंग (श्याम, गौर, लालिमा)
- मसि बिलोचि – काजल से भरे नेत्र
- दृग दुगुन जल – आँखों में दुगुना जल (आँसू या चंचलता)
- रवि जलजत लज जात – सूर्य और कमल भी लज्जित हो जाते हैं

भावार्थ (व्याख्या)

कवि कहते हैं कि नायिका सायंकाल के समान अत्यंत मनोहर प्रतीत होती है। जैसे संध्या में तीन रंग दिखाई देते हैं—लालिमा, श्यामिमा और उज्ज्वलता—वैसे ही नायिका के शरीर में भी तीनों रंगों की छटा झलकती है।

उसकी काजल-भरी आँखों में प्रेम का जल (आँसू या चंचलता) भरा हुआ है, जिससे उसकी शोभा और भी बढ़ जाती है। उसके रूप की आभा ऐसी है कि सूर्य और कमल भी उसके सामने लज्जित हो जाते हैं।

अर्थात् नायिका का सौंदर्य प्रकृति के श्रेष्ठतम उपमानों को भी मात दे देता है।

अलंकार

1. उपमा अलंकार – नायिका की तुलना सायंकाल से।
2. रूपक अलंकार – संध्या के रंगों को नायिका के अंगों में आरोपित करना।
3. अतिशयोक्ति अलंकार – सूर्य और कमल का लज्जित होना।

सार

इस दोहे में कवि ने संध्या के प्राकृतिक सौंदर्य के माध्यम से नायिका के रूप, उसकी आँखों की चंचलता और उसकी अद्वितीय आभा का अत्यंत सुंदर चित्रण किया है। यह श्रृंगार रस का उत्कृष्ट उदाहरण है।

दोहा 61 - व्याख्या

पद

“बंधु भए का दीन के, को तारयो रघुराय।

टूटे टूटे फिरत हो, झूठे बिरद कहाय॥ ६१॥”

प्रसंग

कवि भगवान राम से प्रश्न कर रहे हैं। राम का एक प्रसिद्ध बिरुद (उपाधि) है - दीनबंधु (दीनों के मित्र) और पतित-तारन (पापियों का उद्धार करने वाले)। कवि इसी बात को आधार बनाकर व्यंग्य करते हैं।

शब्दार्थ

- बंधु भए का दीन के - हे राम! आप किस दीन (दुखी) के बंधु बने?
- को तारयो - आपने किसका उद्धार किया?
- रघुराय - रघुवंश के राजा (राम)
- टूटे-टूटे फिरत हो - बिखरे हुए यश के साथ घूमते हो
- झूठे बिरद कहाय - झूठी उपाधियाँ धारण किए हुए हो

व्याख्या

कवि कहते हैं–हे रघुनाथ! आपने किस दुखी व्यक्ति का साथ दिया और किसका उद्धार किया? आप तो 'दीनबंधु' और 'पतित-तारन' कहलाते हैं, पर वास्तव में ऐसा दिखाई नहीं देता। आप इन झूठी उपाधियों के सहारे ही प्रसिद्ध हैं।

लेकिन यहाँ कवि की भावना विरोध की नहीं, बल्कि अत्यंत विनम्र भक्ति की है। वे संकेत करते हैं कि–

- वास्तव में सच्चा दीन और पतित तो मैं ही हूँ।
- जिनका आपने उद्धार किया, वे सच में इतने दीन नहीं थे।
- यदि आप मुझे तारेंगे, तभी आपका 'दीनबंधु' और 'पतित-तारन' नाम सार्थक होगा।

अर्थात कवि स्वयं को सबसे बड़ा दीन मानकर भगवान से कृपा की याचना कर रहे हैं।

भावार्थ

कवि भगवान राम से व्यंग्य के माध्यम से कहते हैं कि आपका 'दीनबंधु' और 'पतित-तारन' नाम तभी सार्थक होगा जब आप सचमुच सबसे बड़े दुखी और पापी (अर्थात् कवि स्वयं) का उद्धार करेंगे। यह दास्य-भाव और विनय-भक्ति का सुंदर उदाहरण है।

काव्य-सौंदर्य

- व्यंग्य अलंकार का सुंदर प्रयोग
- भक्ति और विनय की भावना
- सरल ब्रजभाषा
- भगवान के प्रति आत्मसमर्पण

मूल दोहा (70)

छूटी न सिसुता की झलक, मलमलियो जोबन रंग।

दीपति देह दुहू मिलि, दीपत तापन-तरंग॥ 70॥

प्रसंग

इस दोहे में कवि नायिका की अवस्था का वर्णन कर रहे हैं। नायिका किशोरावस्था में है — न तो पूरी तरह बालिका रही है और न ही पूर्ण युवती बनी है। उसके शरीर में बाल्यावस्था और यौवन – दोनों के लक्षण साथ-साथ दिखाई दे रहे हैं। कवि ने इस संधिकालीन सौंदर्य को अत्यंत मार्मिक ढंग से चित्रित किया है।

शब्दार्थ

- सिसुता – बचपन
- मलमलियो जोबन रंग – कोमल यौवन की आभा
- दुहू मिलि – दोनों मिलकर
- तापन-तरंग – गर्मी की लहरें (कामभाव की तरंग)

व्याख्या

कवि कहते हैं कि नायिका के शरीर से अभी तक बचपन की झलक पूरी तरह गई नहीं है, और उस पर कोमल यौवन का रंग भी चढ़ने लगा है। अर्थात् उसमें बाल्य की सरलता और यौवन की आभा दोनों एक साथ विद्यमान हैं।

इन दोनों अवस्थाओं के मिल जाने से उसकी देह में अद्भुत शोभा उत्पन्न हो गई है। उसका सौंदर्य ऐसा प्रतीत होता है जैसे शरीर से कामोत्तेजना की तरंगें उठ रही हों। यहाँ "तापन-तरंग" शब्द से यौवनजन्य ऊष्मा और आकर्षण का संकेत है।

काव्य-सौंदर्य

1. संधि-अवस्था का चित्रण – बाल्य और यौवन के मिलन का अत्यंत सुंदर वर्णन।
2. रूपक अलंकार – यौवन को रंग और तरंग के रूप में चित्रित किया गया है।
3. श्रृंगार रस (संयोग) – मुख्य रस।
4. भाषा सरल, कोमल और प्रभावशाली है।

सार

यह दोहा नायिका की किशोर अवस्था का मनोहर चित्र प्रस्तुत करता है, जहाँ बचपन की मासूमियत और यौवन की मधुर आभा मिलकर उसके सौंदर्य को और भी आकर्षक बना देती है।